हस्त पुस्तिका सं. २
१९९०

भाकृअनुप
ICAR

निष्पत्तिपर एक झलक

गोवा में स्थित भा. कृ. अ. नु. प. का अनुसंधान समूह
एला, ओल्ड-गोवा ४०३ ४०२.

गोवा में स्थित भा. कृ. अनु. प. का अनुसंधान समूह

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अप्रैल १९७६ में गोवा के लिए भा. कृ. अनु. प. के अनुसंधान समूह की स्थापना की। विभिन्न सरकारी फार्मोपर कार्य करने के बाद इसे अन्तमें वर्ष १९८२ में वर्तमान स्थान अर्थात एला, ओल्ड गोवामें स्थानांतरित कर दिया गया। यह अनुसंधान संस्थान कासारगोड केरळ के प्रशासनिक नियंत्रण में था, उसे अप्रैल १९८९ से पूर्णरुपसे स्वतंत्र अनुसंधान संस्थान के रुपका दर्जा दिया गया है।

यह अनुसंधान समूह कृषि, पशुविज्ञान, तथा मत्स्यविज्ञानके क्षेत्रमें अनुसंधान, प्रशिक्षण तथा प्रसारका कार्य करता है। कृषिगत तकनीकी परिवर्तन को प्रभावी करके तथा सामान्य स्थर के कृषक को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने की दृष्टीसे वर्ष १९८३ में इस अनुसंधान समूहमें एक कृषि विज्ञान केंद्र की स्थापना की गयी।

लक्ष्य (उद्धेश)

१. गोवा तथा गोवा के पासवाले तटवर्ती क्षेत्रों के मुख्य आहार एवं अन्य आर्थिक फसेलोंपर अनुसंधान कार्य करना।
२. पशुविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान करना।
३. अंतर्गत जल में तथा समुद्रीय मत्स्य उत्पादनको बढाने के लिए अनुसंधान करना।
४. मूलरुपसे पर्याप्त उत्पादन हेतू अनुसंधान आधार सामग्री उपलब्ध कराना।
५. स्थानीय कृषकों को तकनीकी प्रशिक्षण देकर उनकी तकनीकी क्षमता का स्तर बढाना।
६ स्थानीय उत्पत्तिमें सुधार लाकर आर्थिक प्रगतीको बढावा देना।

निष्पत्तिपर एक झलक

क : फसल विज्ञान

फसल जिनकी खोज की गयी/ जिनका सुत्रपात किया गया।

१. **धान :** न्यून तथा मध्यम अवधिकी किस्मोंकी खोज की गयी। न्यून अवधिकी किस्म, अन्नदा (गोवा - १) निर्मुक्ता।

२. **गन्ना :** अधिक उत्पादन देनेवाली प्रायद्वीपीय किस्मका सूत्रपात किया गया। (सी. ओ. - ७५२७ की सिफारीश की गयी।

३. **दल्हन :** उदीयमान किस्म डी. पी. एल. सी. २१० की खोज की गयी।

४. **कंदमूल :** शंकरकंदकी अधिक उपज देनेवाले किस्मोंकी खोज की तथा सूत्रपात किया गया जैसे (क्रॉस - ४, आर. एस. ५, ७६ (ओ. पी.) २१९) तथा टैपियोका (एच. १२३, एच. १६५)

५. **नारियल :** उदीयमान कृषिजोपजाति तथा संकर डी × टी का सूत्रपात किया गया तथा विविध खंडों का रखरखाव किया गया।

६. **सुपारी :** उदीयमान ''मंगला'' किस्म के साथ एक निदर्शन भूखंड की स्थापना की गयी।

७. **काजू :** निर्मुक्त किस्मोंका सूत्रपात किया गया। स्थानीय बढीया किस्मके वृक्षोंकी खोज की गयी तथा एक ''सायन'' बैंककी स्थापना की गयी।

८. **आम :** संकर किस्मोंका सूत्रपात किया गया। स्थानीय बढीया किस्मके वृक्षोंकी खोज तथा विविध खंडोंकी स्थापना की गयी।

९. **काली मिर्च :** अत्यधिक उत्पादन देनेवाली किस्मका सूत्रपात किया गया। (पन्नीयूर - १, करीमुन्डा) तथा एरीथ्रीना स्टेन्डर्डपर एक भूखंडका रखरखाव किया गया।

१०. **अदरक और हलदी :** अत्यधिक उत्पादन देनेवाले कृन्तको (क्लोनस्) का सूत्रपात किया गया।

११.. **शाक - सब्जी :** भिन्डीके उदीयमान किस्म (एस. एल. - ४), बैंगनके (आय. आय. एच. आर. - २१) तथा टमाटरके (एम. एस. टी. - २५, एल. इ. - ७९) का सूत्रपात किया गया।

१२. **पतीता :** विभव किस्मोंका सूत्रपात किया गया। (कुर्ग - हनीड्यू, सोलो)

१३. **अननस :** अत्यधिक उत्पादन देनेवाली ''जायंट क्यू'' तथा ''क्वीन'' किस्मोंका सूत्रपात किया गया।

१४. **अमरूद :** इलाहाबाद सफेदा, एक बढीया किस्मके अमरूदका सूत्रपात किया गया।

१५. **पुष्प तथा सजावटी पौधे :** विदेशी गुलाब, बोगनवेल, हायबिस्कटस्, क्रोटन तथा अन्य सजावटी पौधोंकी अनेक उदीयमान किस्मोंका सूत्रपात किया गया।

१६. **छत्रक** (कुकुरमुत्ता) : सीप छत्रकका (ऑयस्टर मशरूम) सूत्रपात किया गया तथा इतकी खेती और जलांडक उत्पादन की तकनीकको मानक रूप दिया गया।

खोज की गयी/ सूत्रपात की गयी तकनीके

१. बीच की फसल के रूप में कंदमूल फसल, जैसे शकरकंद, टैपियोका, तथा पपीता, केला, अनन्नस तथा अमरूद जैसे फल एवं दालचीनी, काली मिर्च जैसे मसालेकी नारीयल पर आधारीत फसल पद्धतिका सूत्रपात किया गया।

२. धान पलिहरमें रब्बीकी उपयुक्त फसलके रूपमें मूँगफली, मूँग, दल्हन तथा मक्केकी खेतीका सूत्रपात किया गया।

३. अनुत्पादी काजूके वृक्षोंके पुनर्वयन के लिए उच्चतर कार्यका निरूपण किया गया।

४. धानमें नाशक जीव नियंत्रणके उपायोंको मानकरूप दिया गया।

५. धान तथा गन्नेकी पोषक द्रव्योंकी आवश्यकता का पता लगाया गया।

६. उदीयमान स्थानीय केलेके किस्मोंके भूखंडोंकी स्थापना की गयी।

ख : पशुविज्ञान

सूत्रपात की गयी नस्लें

१. **सुअर :** द्विनस्लीकरणके लिये दो विदेशी नस्लोंका (यॉर्कशायर, लॅन्डरेस) सूत्रपात किया गया।

२. **खरगोश :** माँसभक्षण के लिए प्रयोग में लाये जानेवाले चार विदेशी खरगोशकी नस्लें अर्थात 'सोव्हीयत चिन्चीला, ग्रे जाइंट, व्हायट जाइन्ट तथा न्यूझिलन्ड व्हायटका सूत्रपात किया गया।

३. **मुर्गीपालन :** अत्याधिक अंडेके उत्पादनके लिए एच. एच. - २६० लेयर स्ट्रेन बँकयार्ड मुर्गीपालन के लिए ''एस्ट्रो व्हाइट'' क्रॉस, तथा माँस उत्पादन के लिए आइ.बी.बी. ८३ क्रॉस का सूत्रपात किया गया।

४. **बतख :** आमिस किस्मकी ''सफेद पेकीन'' तथा अंडेके किस्मकी ''खाकी कॅम्पबेल'' का सूत्रपात किया गया।

५. **बटेर :** आमिस किस्मकी जपानी बटेर का सूत्रपात किया गया।

६. **मछली :** अक्षार जल में मत्स्य पालन के लिए बडे कार्प (काटला, रोहू, म्रिगल) एवं सामान्य कार्पका सूत्रपात किया गया।

७. **चारा :** अत्याधिक उत्पादन देनेवाली चारे की किस्मे एन. बी. - २७ तथा व्ही. एच. - १८ का सूत्रपात किया गया।

खोज किये गये प्रतिबन्ध तथा विकसित/सूत्रपात की गयी तकनीक।

१. गाय, सुअर, खरगोश, मुर्गी जिसमें बतख, बटेर तथा अक्षार जल मछली शामिल है, के पालन के लिए इकाइयाँ स्थापित की गयी।

२. संकरीत गायों के लिए प्रजनन मानकोंकी स्थापना की गयी।

३. गो अनुर्वरता समस्याओंके प्रभाव एवं प्रकृतिकी पहचान की गयी।

४. पशुओंके खरीदते समय की समस्या जिसमें गर्भस्त्रवकी प्राजिरूजीप समस्या भी शामिल है, की खोज की गयी।

५. गोप्रजनन प्रबंध के लिये प्रक्रियाओंका विकास किया गया।

६. कृषिगत पशुओं के पोषक समस्याओंका विकास किया गया।

७. चारे का रक्षण एवं समृद्रिकी प्रक्रियाओंको मानक रूप दिया गया।

८. स्थानीय गौण उत्पादन के साथ अर्थिक राशन सूत्रित किया गया।

९. मुर्गीपालन की बिमारी के लिए सस्ती होमिओपॅथीक एवं आयुर्वेदिक इलाजों की खोज की गयी।

१०. संमिश्र मत्स्यपालन का सूत्रपात किया गया।

११. एकीकृत मत्स्य - पशू तथा, मत्स्य - ध्यान संवर्धन पद्धतिका सूत्रपात किया गया।

प्रोद्योगिकी का हस्तांतरण (१९८९ तक)

प्रसार कार्य का लाभ :

1. प्रशिक्षित किसान	४३२३
२. चलाये गये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	२०३
३. अपनाये गये कृषक परिवार	४८२
४. आयोजित निदर्शन/प्रात्यक्षीक	३१
५. विस्तार साहित्य का प्रकाशन	१३
६. प्रसारित रेडिओ संवाद	८७
७. आयोजित किसान मेला/प्रदर्शनी/क्षेत्रीय दिन	१६
८. तैयार की गयी प्रशिक्षण टिप्पणीयाँ	८
९. प्रकाशित प्रसिद्ध लेख	९

किसानोंको खेती साधनों का वितरण

१.	अधिक उत्पादन देनेवाले बीज, सामग्रीका वितरण।	
	क) धान	१५०५ कि. ग्रा.
	ख) दल्हन	२५३ कि. ग्रा.
	ग) तेल बीज	२०८६ कि. ग्रा.
	घ) शाक सब्जी	७४७ पॅकेट
	ड) अन्य रोपण सामग्री	३९८३
२.	उर्वरक	२९,१९८ कि. ग्रा.
३.	किटकनाशी	१,३२० कि. ग्रा. तथा ५४ लिटर्स
४.	पशुओं की सुधार की गयी नस्लोंका वितरण :	
	क) मुर्गी	१७४०
	ख) बटेर	२९०
	ड) सुअर	९२
	ग) बतख	७०
	घ) खरगोश	९४
५.	पशु-चारा	४,६९७ कि. ग्रा.

विशेष कार्य अधिकारी

गोवामें स्थित भा.कृ.अ.नु.प. के अनुसंधान समुह द्वारा प्रकाशित.